

स्त्री-भक्त राजा-पंचतंत्र

एक राज्य में अतुलबल पराक्रमी राजा नन्द राज्य करता था । उसकी वीरता चारों दिशाओं में प्रसिद्ध थी । आसपास के सब राजा उसकी वन्दना करते थे । उसका राज्य समुद्र-तट तक फैला हुआ था । उसका मन्त्री वररुचि भी बड़ा विद्वान् और सब शास्त्रों में पारंगत था । उसकी पत्नी का स्वभाव बड़ा तीखा था । एक दिन वह प्रणय-कलह में ही ऐसी रुठ गई कि अनेक प्रकार से मनाने पर भी न मानी । तब, वररुचि ने उससे पूछा - "प्रिये ! तेरी प्रसन्नता के लिये मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ । जो तू आदेश करेगी, वही करूँगा ।" पत्नी ने कहा - "अच्छी बात है । मेरा आदेश है कि तू अपना सिर मुँडाकर मेरे पैरों पर गिरकर मुझे मना, तब मैं मानूँगी ।" वररुचि ने वैसा ही किया । तब वह प्रसन्न हो गई ।

उसी दिन राजा नन्द की स्त्री भी रुठ गई । नन्द ने भी कहा- "प्रिये ! तेरी अप्रसन्नता मेरी मृत्यु है । तेरी प्रसन्नता के लिये मैं सब कुछ करने के लिये तैयार हूँ । तू आदेश कर, मैं उसका पालन करूँगा ।" नन्दपत्नी बोली- "मैं चाहती हूँ कि तेरे मुख में लगाम डालकर तुझपर सवार हो जाऊँ, और तू घोड़े की तरह हिनहिनाता हुआ दौड़े । अपनी इस इच्छा के पूरी होने पर ही मैं प्रसन्न होऊँगी ।" राजा ने भी उसकी इच्छा पूरी करदी ।

दूसरे दिन सुबह राज-दरबार में जब वररुचि आया तो राजा ने पूछा- "मन्त्री ! किस पुण्यकाल में तूने अपना सिर मुँडाया है ?"

वररुचि ने उत्तर दिया- "राजन् ! मैंने उस पुण्य काल में सिर मुँडाया है, जिस काल में पुरुष मुख में लगाम डालकर हिनहिनाते हुए दौड़ते हैं ।"

राजा यह सुनकर बड़ा लज्जित हुआ ।

अनुवाद - कुलदीप धर

भी-रुतु गार-पंगउंउ

एक गारु मे सुतुलुल पराकुभी गार ननु गारु करतु था।
उमकी वीरतु गारें रिमाउं मे पुभिसू थी। सुमपाम के मग गार
उमकी वनुन करतु थे। उमका गारु मभुद्-उए उक टैला रुमु
था। उमका भत्री वररुगि सी गरा विम्वना उर मग माभुं मे
पारंगतु था। उमकी पतानी का भ्रुवाव गरा उीपा था। एक
दिन वरु पुष्प-कलरु मे की रिभी रुं गरं कि सुनेक प्रकार मे
भनने पर सी न भानी। उर, वररुगि ने उममे पुका - "पिये ! उरी
पुमत्रुतु के लिये मे मग कुळ करने के उयार है। ए उ मुट्टे म
करेगी, वकी करेगा।" पतानी ने कला - "सुष्ठी गतु है। मेरा
मुट्टे म है कि उ मुपना भिर भुंरुकर मेरे पौरं पर गिरकर भुं
भन, उर मे भानुंगी।" वररुगि ने वैभा की किय। उर वरु पुमत्रु
है गरं।

उभी दिन गार ननु की भी सी रुं गरं। ननु ने सी कला - "पिये !
उरी सुपुमत्रुतु मेरी भुं है। उरी पुमत्रुतु के लिये मे मग कुळ
करने के लिये उयार है। उ मुट्टे म कर, मे उमका पालन करेगा
।" ननुपतानी गेली - "मे गारुती है कि उर भुप मे लगाभ
रुलकर उरपर भवार के रउं, उर उ भेरे की उरु
दिनदिनातु रुमु टैरे। सुपनी उम उम्मा के पुरी केने पर की मे
पुमत्रु हैउंगी।" गार ने सी उमकी उम्मा पुरी करदी।

एभरे दिन भुंरु गार-एरगर मे एर वररुगि सुथा उे गार ने

पुष्पा - "भर्तृ ! किम पुष्टकाल में तुने मपना मिर भंराया कै ?"

वरुणि ने उडुग मिया - "गएना ! मैंने उम पुष्ट काल में मिर भंराया कै, एम काल में पुरुष भाप में लगाभ रालकर फिनफिनते काए म्हेरते कै।"

गए वरु भुनकर मरा लक्ष्मिउ रुमु।

मनुवाए - कुलमीप एर